International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 891-894

प्रवासी साहित्य : एक सर्वेक्षण

बिजेन्द्र
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, चेन्नई, तमिलनाडु, भारत।

प्रस्तावना

हिंदी प्रवासी साहित्य हिंदी के विराट् संसार का अंग है। उसने अपनी विशिष्ट संवेदना, दृष्टिकोण, परिस्थिति और सृजन–प्रक्रिया के कारण प्रवासी हिंदी साहित्य को एक मौलिक रूप प्रदान करके हिंदी–संसार में अपना योगदान किया है। भारत में रचे जाने वाले हिंदी साहित्य से यह प्रवासी हिंदी साहित्य संवेदना, परिवेश अैर सरोकार में एकदम भिन्न है, क्योंकि उनकी चिंताएँ, समस्याएँ तथा संघर्ष भारत के लेखक से भिन्न हैं। इस प्रकार हिंदी प्रवासी साहित्य दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है – एक तो वह अपनी मौलिकता और विशिष्टता रखता है और हिंदी साहित्य में कुछ नया जोड़ता है, दूसरे वह हिंदी साहित्य को वैश्विक बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान रखता है।

किसी भी भाषा का प्रवासी साहित्य उस समाज के लोगों के प्रवास करने तथा यायावरी वृत्ति के स्वरूप पर निर्भर करता है। मानव–जाति के इतिहास में प्रवास की दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ मिलती हैं – स्वेच्छा से प्रवास और विवशता में प्रवास। भारत से असंख्य धर्म–प्रचारक और व्यापारी स्वेच्छा से विदेश जाते रहे हैं और ऐसे ही लोग विदेशों से भारत आते रहे हैं। भारत का इतिहास विदेशी लुटेरों, धर्म–प्रचारकों, व्यापारियों तथा यात्रियों के भारत–आगमन की घटनाओं से भरा पड़ा है। भारत से जो भी लोग देश के बाहर गए, उनका उद्देश्य धर्म एवं व्यापार था और उनका कोई लक्ष्य राजनीतिक तथा अधिकार करना नहीं था, जबकि दूसरे देशों में आनेवाली जातियों और उनकी सेनाओं का उद्देश्य इस देश की धन–संपत्ति को लूटने के साथ अपने धर्म का विस्तार करना भी था। मनुष्य की प्रवास की इस प्रवृत्ति ने कई देशों के इतिहास बदल दिए और उनकी मूल संस्कृति नष्ट कर दी। विवशता में किए गए प्रवास के उदाहरण भी इतिहास में भरे पड़े हैं। इनमें प्राकृतिक आपदा के साथ मनुष्य द्वारा निर्मित आपदाओं का भी योगदान रहा है। भारत में जब यूरोपियन जातियों का आधिपत्य हो गया तो उन्होंने भारत के साथ–साथ अनेक देशों में अपने अनेक उपनिवेश स्थापित किए और वे अपने–अपने उपनिवेशी देशों में भारतीयों को यह मालूम नहीं था कि उन्हें कहाँ तथा किस उद्देश्य से जहाज में बिठाकर ले जाया जा रहा है। यह भारतीयों का ऐसा यातनामय प्रवास था कि उन्हें मॉरिशस, फिज़ी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, दक्षिण अफ्रीका, ब्रिटिश गयाना आदि देशों में पहुँचकर ही ज्ञात होता था कि उन्हें धोखे में रखकर खेतों में काम करने के लिए मजदूर बनकर लाया गया है। ये भारतीय मजदूर 'इंडियन इंडेचर लेबर सिस्टम' अर्थात् शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत ले जाए गए थे। ये भारतीय लोग अधिकांश रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार आदि प्रदेशों से गए थे, जिनकी मातभाषा भोजपुरी थी, किंतु ये लोग अवधी में रची 'रामचरितमानस' तथा 'हनुमान चालीसा' आदि धार्मिक ग्रंथ अपने साथ लाए थे, जो इनके अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा के आधार बने। ये भारतीय मजदूर अपनी बेकारी, गरीबी, प्रलोभन आदि विभिन्न कारणों से अपनी मातृभूमि को छोड़कर एक अनजानी दुनिया में चले आए थे, लेकिन इस नर्क जैसे वनवास में अपने जहाजी भाइयों के प्रेम, धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त जीवन–शक्त को कायम रख सके।

भारत के इन अशिक्षित, निर्धन, सीधे–सरल व्यक्तियों के साथ उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में अंग्रेजी शिक्षित युवकों ने इंग्लैंड आदि देशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने, बैरिस्ट्री करने तथा उसके बाद भारत लौटकर अंग्रेजी सरकार में उच्च पदों पर नौकरी करने के निमित्त जाना प्रारंभ किया। इन युवकों में मोहनदास करमचंद गांधी जैसे युवक भी थे, जो बैरिस्ट्री करने के लिए इंग्लैंड गए थे और वीर सावरकार जैसे क्रांतिकारी भी थे, जो भारत की स्वतंत्रता का स्वप्न देख रहे थे। भारत की स्वतंत्रता के उपरांत देश के शिक्षित युवक इसी प्रकार इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों में जाते रहे। ये भारतीय प्रायः अपने घरों में अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं और चाहते हैं कि बच्चों में भी यही प्रवृत्ति बनी रहे। ये यदाकदा अपनी संवेदनाओं तथा अनुभूतियों को अपनी मातृभाषा हिंदी में अभिव्यक्त करते रहे हैं। यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि इन सभी भारतीय प्रवासियों एवं भारतवंशियों की आजीविका की भाषा अंग्रेजी है तथा वहाँ के दैनिक जीवन में भी हिंदीभाषा का प्रयोग नहीं होता है, फिर भी ये अपने देश एवं भाषाप्रेम के कारण अपनी अभिव्यक्ति के लिए हिंदीभाषा का चयन करते हैं, परंतु इस समानता के अतिरिक्त गिरमिटिया मजदूरों ओर उनकी संतान–लेखकों तथा यूरोप–अमेरिका आदि पूँजीपति देशों में रहने वाले हिंदी–लेखकों में और कोई समानता नहीं है। इन दो प्रकार की प्रवासी हिंदी लेखकों का इतिहास, परिवेश, परिस्थिति, शिक्षा, भाषा, आधुनिकता आदि सभी में बड़ा भारी अंतर है। मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि देशों में जानेवाले भारतीय अशिक्षित एवं निर्धन श्रमिक थे, देहाती लोग थे जिन्हें भ्रम एवं प्रलोभन में रखकर मातृभूमि से हजारों मील दूर जहाज में भेड़–बकरियों की तरह भरकर भेज दिया गया था। इन भारतीयों को गोरे मालिकों ने एक प्रकार से गुलाम बनाकर रखा और इन्हें घोर बदहाली, अपमान तथा यातना का जीवन जीना पड़ा। इस कारण इन दोनों प्रकार के प्रवासी भारतीयों एवं भारतवंशियों के हिंदी साहित्य की प्रेरणाभूमि, परिवेश, परिस्थिति, कथानक, पात्र, संवेदना, सरोकार एवं जीवन–दृष्टि भिन्न–भिन्न है, क्योंकि इसके मूल में एक कारण यह भी है कि अमेरिका एवं यूरोप के पूँजीवादी देशों तथा मॉरिशस–फिजी–सूरीनाम आदि देशों की रूप–रचना, इतिहास, जीवन–शैली, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन, विकास का स्तर सभी में कोई समानता नहीं है, परंतु इनके साहित्य तथा इनकी सर्जनात्मकता में एक ऐसी समानता है, जो इनकी विभिन्नता को एकरूपता में बदल देती है और वह है इन लेखकों का भारत–प्रेम, भारत की धर्म–संस्कृति–भाषा से प्रेम और भारत को एक सुखी, समृद्ध एवं पूर्व जाने वाले भारतीय श्रमिकों तथा उनके वंशजों तथा

कुछ दशक पूर्व पूँजीवादी देशों में शिक्षा एवं सुखद भविष्य का स्वप्न लेकर जानेवाले भारतीयों को उनका स्वदेश तथा उनकी भाषा–संस्कृति ही उन्हें एक सूत्र में बाँधती है और उनका साहित्य हम हिंदी प्रवासी साहित्य में सम्मिलित करते हैं।

विश्व के अनेक देशों में पहुँचे इन भारतवंशियों के संसार के संपर्क का रास्ता आधुनिककाल में महात्मा गांधी ने खोला, जब वे उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में भारतीय प्रवासियों की मदद के लिए दक्षिण अफ्रीका गए थे और वहाँ भारतीय व्यापारियों तथा गिरमिटिया मजदूरों के स्वत्व, स्वाभिमान एवं अधिकारों के लिए अहिंसक संघर्ष किया था। गांधी एकमात्र ऐसे भारतीय थे, जिनका संपर्क एवं संबंध इंग्लैंड आदि यूरोपीय देशों में जाने–रहनेवाले शिक्षित भारतीयों के साथ–साथ मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में जाकर व्यापार करनेवाले भारतीयों और गिरमिटिया मजदूरों के साथ था। गांधी के दक्षिण अफ्रीका से अँग्रेजी–हिंदी–तमिल भाषाओं में 'इंडियन ओपिनियन' साप्ताहिक पत्र निकालकर भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के स्वाभिमान एवं अधिकार की लड़ाई को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचा दिया और भारत आकर 'इंडियान नेशनल कांग्रेस' के 1901 के अधिवेशन में इन प्रवासी गिरमिटिया मजदूरों के पक्ष में प्रस्ताव स्वीकृत कराया। इन आरंभिक प्रयासों ने भारतीय प्रवासियों में एक नई चेतना, एक स्वत्व एवं स्वतंत्रता का भाव, अपनी संस्कृति तथा भाषा की रक्षा की आकांक्षा उत्पन्न कर दी और भारत की पत्र–पत्रिकाओं में मॉरिशस, फिजी आदि देशों में भारतीयों के संबंध में लेख प्रकाशित होने लगे। 'मर्यादा' पत्रिका ने जून 1922 में तथा 'चाँद' पत्रिका ने जनवरी, 1926 में 'प्रवासी अंक' निकालकर पूरे देश का ध्यान प्रवासी भारतीयों की ओर आकर्षित किया। यहाँ तक कि प्रेमचंद जैसा कथाकार भी अछूता नहीं रहा और उन्होंने 'चाँद' के प्रवासी अंक के लिए 'शूद्रा' कहानी लिखी, जो मॉरिशस गए भारतीय मजदूरों की यातना, विवशता एवं सतीत्व की दृढ़ता पर लिखी गई थी। भारतीय भाषाओं में संभवतः यह पहली कहानी थी, जो किसी बड़े साहित्यकार द्वारा गिरमिटिया मजदूरों के छल–कपटपूर्ण प्रवास में गोरों तथा अमानवीय शोषण की वास्तविकता को पाठकों तक पहुंचा रही थी।

बीसवीं सदी के दूसरे दशक में पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने इस प्रवासी संसार की दिशा में जागृति उत्पन्न करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। पं. बनारसी दास चतुर्वेदी ने 'प्रवासी भारतवासी' 1918, 'फिजी में भारतीय' तथा 'फिजी की समस्या' पुस्तकें लिखीं और वहाँ के प्रवासी भारतीय मजदूरों की समस्याओं की ओर देश का ध्यान आकर्षित किया।

देश की केंद्रीय सत्ता का नेतृत्व जब अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के रूप में किया तथा डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने इंग्लैंड में भारतीय उच्चायुक्त का पद संभाला तो प्रवासियों के संबंध में एक नए युग का आरंभ हुआ। अटलबिहारी वाजपेयी का एकल काव्यपाठ कराकर तो इतिहास ही रच डाला। उन्होंने लंदन में हिंदी की संस्थाओं की स्थापना कराई, कवि–सम्मेलन कराए, हिंदी–लेखकों को इंग्लैंड आमंत्रित किया, प्रवासी हिंदी लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित कराने की व्यवस्था की ओर हिंदीभाषा–साहित्य के विकास के लिए सदैव तत्पर रहे। देश के प्रवासियों एवं भारतवंशियों के सम्मान एवं मिलन के लिए 9–11 जनवरी 2013 को पहला 'प्रवासी भारतीय दिवस' नई दिल्ली में आयोजित किया। विश्व के लगभग 110 देशों में रहनेवाले लगभग दो करोड़ भारतवंशी प्रवासियों ने पहली बार अनुभव किया कि उनकी मातृभूमि उन्हें भूली नहीं है। 'वसंत' त्रैमासिक पत्रिका (मॉरिशस) के संपादक डॉ. बीरसेन जागासिंह ने 'प्रथम प्रवासी भारतीय दिवस' का अभिनंदन करते हुए अपने संपादकीय में लिखा था कि गिरमिटियों के वंशजों की तीन–चार पीढ़ियों के बाद भी 'भारतमाता' को विस्मृत नहीं किया गया। उन दरिद्र परंतु स्वाभिमानी गिरमिटियों के बच्चों ने आज भी भारतीयता की ज्योति जलाए रखी है और उनमें से अधिकतर ने हिंदुत्व को 'धर्मो रक्षति रक्षितः' के अनुसार सुरक्षित रखा है।

विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदीभाषा की स्थिति काफी मजबूत है। हिंदीभाषा का अध्ययन–अध्यापन विश्व के 46 से अधिक देशों में होता है, परंतु सभी देशों में हिंदी में साहित्य की रचना नहीं होती। हिंदी के प्रवासी साहित्य के सर्वेक्षण के लिए भारतेत्तर देशों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

1. गिरमिटिया मजदूरों के देशों का हिंदी साहित्य : इनमें मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गयाना, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिडाडा एवं टुबैगो आदि देश आते हैं। 2. भारत के पड़ोसी देशों का हिंदी साहित्य : इन देशों में नेपाल, पाकिस्तान, बंगलादेश, भूटान, श्रीलंका म्याँमार (बर्मा) आदि देशों की गणना की जाती है। 3. विश्व के अन्य महाद्वीपों का हिंदी साहित्य : इन महाद्वीपों को पाँच भागों में बांटा जा सकता है – (क) अमेरिका महाद्वीप : संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा आदि। (ख) यूरोप महाद्वीप : रूस, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड, नीदरलैंड, नार्वे, डेनमार्क, आस्ट्रिया, स्विटजरलैंड, स्वीडन, फिनलैंड, इटली, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया, बल्गारिया, उक्रेन, कोशिया, आदि। (ग) मध्य–एशिया, के देशों का हिंदी साहित्य : इनमें अधिकांश मुस्लिम देश हैं – ईराक, ईरान, आबूधाबी, टर्की आदि। (घ) एशिया महाद्वीपः चीन, जापान, कोरिया, थाईलैंड आदि। (ङ) आस्ट्रेलिया : आस्ट्रेलिया आदि।

गिरमिटिया मजदूरों के देशों का हिंदी साहित्य

उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से भारतीयों को हजारों–लाखों की संख्या में गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में, छल–प्रलोभन में फाँसकर ले जाना शुरू किया। भारतीय एक ही जैसी परिस्थितियों में कोलकाता तथा चैन्नई के बंदरगाहों से जहाज में जानवरों की तरह लादकर इन देशों में भेजे गए थे। कुछ तो रास्ते में ही मर गए और जो बचे वे बुरे हाल में अपने गंतव्य पहुँचे और तुरंत ही उन्हें गोरे मालिकों को सौंप दिया गया।

ऐसी दुर्दशा तथा घोर दासत्व की स्थिति में रहनेवाले भारतीय मजदूर अधिकांशतः पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के थे, जो भोजपुरी भाषी थे, किंतु कुछ लोग दक्षिण भारत और महाराष्ट्र के भी थे। इनमें कुछ भारतीय मजदूर अपने साथ 'रामचरितमानस', 'हनुमान चालीसा', 'आल्हा', 'सत्यनारायण कथा', 'महाभारत', 'गीता', 'सुखसागर' आदि ग्रंथ ले गए थे, जिनके कारण ये भारतीय विपत्त, शोषण और व्यथा को सहन करने का साहस तथा अपनी संस्कृति एवं भाषा का जीवित रखने का अटूट संकल्प कर सके।

माणिकलाल डॉक्टर, स्वामी मंगलानंद, डॉ. चिरंजीव भारतीय दंपती, पं. आत्माराम विश्वनाथ, स्वामी स्वतंत्रानंद, पं. काशीनाथ किश्तो, पं. रामअवध शर्मा, कुँवर महाराज सिंह, मेहता जैमिनी, स्वामी विज्ञानानंद, बेनी माधे सुतीराम, श्रीनृसिंह दास, सनातनधर्म सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य परोपकारिणी सभा, पत्र–पत्रिकाओं, नाटकों, फिल्मों आदि ने मॉरिशस में हिंदीभाषा के अध्ययन–अध्यापन तथा साहित्य–रचना का नींव रखी। पं. उमाशंकर गिरजानन, पं. श्रीनिवास जगदत्त, नेमनारायण 'गुरुजी', जयनारायण राय, मोहनलाल मोहित, गिरधारी भगत, लेखमन् भगत, सूर्यप्रसाद मंगर भगत, ब्रजेंद्रकुमार भगत 'मधुकर', शिवसागर रामगुलाम, प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल, सोमदत्त बखोरी, प्रो. रामप्रकाश आदि अनेक हिंदी प्रेमियों एवं देशभक्तों ने हिंदीभाषा एवं साहित्य की धारा को आगे

विकसित किया, हिंदी–शिक्षण का विस्तार किया और हिंदी–लेखकों की पीढ़ियाँ तैयार कीं। आज मॉरिशस के अनेक स्कूलों में हिंदी पढाई जाती है, महात्मा गांधी संस्थान में स्नातक, स्नातकोत्तर कक्षाओं के साथ हिंदी मं शोधकार्य भी कराया जाता है।

मॉरिशस की हिंदी–कविता का इतिहास 'होली' कविता से ही आरंभ होता है जो 'गणेशी' उपनामधारी किसी कवि ने लिखी थी। हिंदी–कविताओं को खोजने का महत्वपूर्ण कार्य मॉरिशस के प्रह्लाद रामशरण ने किया है। इनके संपादन में दो काव्य–संग्रह छपे हैं – 'मॉरिशस का आदिकाव्य–कानन' तथा 'मॉरिशस के मध्यकालीन काव्य–प्रसून'।

मॉरिशस के हिंदी साहित्य में गद्य की विधाओं का भी समुचित विकास हआ है। इनमें उपन्यास, कहानी, लघुकथा, नाटक, यात्रा–वृत्तांत, संस्मरण, भेंटवार्ता, निबंध आदि विधाओं में रचनाएँ मिलती हैं। मॉरिशस की हस्तलिखित पत्रिका 'दुर्गा' (1935–38) में इनमें अधिकांश गद्य–विधाओं का जन्म हो चुका था, परंतु वहाँ के अधिकांश गद्य–लेखक 'दुर्गा' के अस्तित्व से अपरिचित रहने के कारण इन गद्य–विधाओं में स्वयं को नहीं जोड़ पाए। 'दुर्गा' के सीमित पृष्ठों के कारण उसमें उपन्यास का लेखन नहीं हो सकता था और वैसे भी मॉरिशस में उपन्यास–लेखन का आरंभ सन् 1960 से हुआ, जब कृष्णलाल बिहारी का उपन्यास–लेखन में आगमन से ही वे उसके वास्तविक जनक और विस्तारक बने। यह एक प्रकार से अभिमन्यु युग ही है, जो उनके पहले उपन्यास 'और नदी बहती रही' 1970 से आज तक चल रहा है। अनत के अभी तक बत्तीस उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। उपन्यास के क्षेत्र में मॉरिशस में अभिमन्यु अनत अकेले ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने इतनी बड़ी संख्या में उपन्यासों की रचना की है। अनत ने अपने देश के गूँगे एवं चीखते इतिहास को 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे' तथा 'और पसीना बहता रहा' की उपन्यास–त्रयी में प्रस्तुत किया। अभिमन्यु अपने देश के भूमिपुत्र हैं अपनी जातीय परंपरा के राष्ट्र–उपन्यासकार हैं।

मॉरिशस की हिंदी–कहानी का इतिहास उपन्यास से भिन्न है। यद्यपि कहानी में भी अभिमन्यु सबसे बड़े लेखक हैं, परंतु दूसरे प्रतिभा–संपन्न लेखकों का अभाव नहीं है। मॉरिशस में हिंदी की पहली कहानी के रूप में सूर्यप्रसाद मंगर भगत की कहानी 'विनाश' 1934, वली मुहम्मद की कहानी, 'अनबोलती चिड़ियाँ', पं. तारकेश्वरनाथ चतुर्वेदी की 'इन्दो' (दिसंबर, 1933) तथा पं. जय प्रगास शर्मा की कहानी 'तारा' (1934) का उल्लेख किया जाता है। हिंदी–कहानी में अभिमन्यु अनत के आगमन से पूर्व 'सनातन धर्मार्क', 'दुर्गा', 'आर्य पत्रिका', 'जागृति', 'वर्तमान', तथा 'मजदूर' आदि हिंदी–पत्रिकाओं में तीस से अधिक लेखकों की लगभग पचास कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी थीं और हिंदी–कहानी की बुनियाद पड़ गई थी। इन कहानियों पर भारतीय जागरण का प्रभाव था। इनमें प्रमुखतः समाज–सुधार तथा सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति है और अंधविश्वासों, कुरीतियों, विसंगतियों आदि की आलोचना है। विधवा–विवाह, बेमेल–विवाह, वेश्यावृत्ति, दहेज, आर्यसमाज तथा सनातन धर्म के मतभेद और द्वंद्व, निर्धन–धनी का अंतर, भारतीय प्रवासियों पर गोरों के अत्याचार आदि इन कहानियों के विषय हैं।

मॉरिशस के हिंदी–कहानीकारों ने अपने निजी कहानी–संग्रह तो प्रकाशित कराए ही, सामूहिक कहानी–संकलनों के लिए भी अपनी कहानियाँ प्रदान कीं। कहानीकारों के निजी कहानी–संग्रहों में ईश्वर गंगाराम का 'एक सपना', ईश्वरदत्त अलिमन का 'नई कहानियाँ', 'प्रेमचंद भूली का 'चिराग और तूफान'', दीपचंद बिहारी के 'सागर–पार' एवं 'स्वर्ग में क्या रखा है', सुनीता अलियार का 'दो शरीर एक आत्मा', ब्रजलाल रामदीन का 'परख', अभिमन्यु अनत के 'खामोशी के चीत्कार', 'इन्सान और मशीन', 'वह बीच का आदमी', 'एक थाली समंदर', मुख्य हैं। इन निजी एवं सामूहिक कहानी–संकलनों में मॉरिशस के समाज का व्यापक संसार है। अभिमन्यु अनत के 'वसंत' पत्रिका के संपादन के बीस वर्षों का समय मॉरिशस की हिंदी–कहानी का स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

मॉरिशस में हिंदी–नाटक तथा रंगमंच का उद्भव और विकास बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ही हो गया था। आरंभ में नाटक का प्रयोजन धार्मिक भावना और मनोरंजन था। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में 'रामलीला', 'इंद्रसभा', 'कृष्ण–लीला' आदि धार्मिक नाटकों की धूम थी। इनका मंच धार्मिक पर्व–उत्सव तथा शादी–विवाह के अवसरों पर होता था। मॉरिशस में जब बंबई की नाटक कंपनियों ने जाना शुरू किया तो खड़ी बोली का विकास हुआ और नाटक एवं रंगमंच की उन्नति हुई। रेडियो तथा सिनेमा के आगमन पर जयनारायण राय, ब्रजेंद्रकुमार भगत 'मधुकर', सोमदत्त बखोरी, जानकी और लक्ष्मणप्रसाद रामयाद आदि ने भारतीय लेखकों की कहानियों पर रेडियो नाटक तथा एकांकी लिखे और उनका प्रसारण हुआ।

मॉरिशस में निबंध, आलोचना, शोधग्रंथ, भेंटवार्ता, यात्रा–वृत्तांत, संस्मरण, लोकसाहित्य आदि विधाओं पर साहित्य तो मिलता है, किंतु इन विधाओं के लेखकों की संख्या अधिक नहीं है। निबंध में पहला निबंध पं. देवदत्त शर्मा का मिलता है जो 'स्त्री और शिक्षा' शीर्षक से नवंबर, 1921 में छपा था। वैसे 'दुर्गा' (1935–38) हस्तलिखित पत्रिका से निबंध विधा का वास्तविक आरंभ होता है। इसमें लगभग पचास निबंध छपे हैं, जो हिंदीधर्म, जाति, भारतमाता, समाज–सुधार, नारी चेतना, अस्मिता–बोध, हिंदी की दुर्दशा, संघर्ष आदि पर लिखे गए हैं।

पड़ोसी देशों का हिंदी साहित्य

भारत के पड़ोसी देशों में हिंदी साहित्य की रचना की स्थिति सुखद नहीं है। पाकिस्तान का उर्दू साहित्य तो हिंदी में खूब अनुदित हुआ है, लेकिन वहाँ किसी लेखक ने देवनागरी लिपि में रचना की हो, इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। बांग्लादेश की स्थिति भी यही है। वहाँ के बांग्ला लेखकों की रचनाएँ हिंदी में छपती रही हैं। बर्मा (म्याँमार) में एक ऐसा समय था, जब सत्यनारायण गोयनका, चंद्रप्रकाश प्रभाकर 'मौतीरि' हिंदी साहित्य सम्मेलना, बर्मा, आर्यसमाज, सनातन धर्म, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा (बर्मा शाखा), दीनानाथ, डॉ. ओमप्रकश वर्मा, रामप्रसद वर्मा, श्यामचरण मिश्र आदि ने हिंदीभाषा एवं साहित्य के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किए। नेपाल में कई शताब्दियों से पहले से ही हिंदी का प्रयोग होता रहा है तथा वहाँ अनेक हस्तलिखित कृतियाँ मिलती हैं। नेपाल के हिंदी प्रोफेसर सूर्यनाथ गोप के अनुसार नेपाल में हिंदीग्रंथों की संख्या एक हजार से अधिक है, परंतु अधिकांश अप्रकाशित हैं तथा उनकी कोई व्यवस्थित सूची भी उपलब्ध नहीं है।

अमेरिका महाद्वीप का हिंदी साहित्य

अमेरिका में भारतीयों के आगमन का पहला लिखित प्रमाण सन् 1670 का मिलता है, फिर 1788 में व्यापार का, 1898 में कुछ भारतीय कृषक प्रवासी के रूप में वहाँ पहुँचे। स्वामी विवेकानंद की सन् 1893 की अमेरिका यात्रा से तो दोनों देशों के संबंधों का नया इतिहास शुरू हुआ। सन् 1908 में तारकनाथ पहले भारतीय थे, जो वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में अध्ययन के लिए अमेरिका पहुँचे बीसवीं सदी के सातवें दशक से शिक्षित भारतीयों का अमेरिका जाने का नया दौर शुरू हुआ, जब भारतीय वहाँ उच्च शिक्षा के साथ उच्च एवं समृद्ध जीवन के लिए जाने लगे और सन् 1997 में इनकी सुख्या 13 लाख थी। इन भारतीयों में हिंदी एवं अहिंदीभाषी सभी

प्रदेशों के लोग थे, और काफी लोग अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति, साहित्य की रक्षा के प्रति संवेदनशील थे। इसी से प्रेरित होकर वहाँ भारतीय विद्या भवन, चिन्मय शिक्षा, हिंदू मंदिर तथा साहित्यिक एवं भाषिक संस्थाओं की स्थापना हुई। अमेरिका में कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह ने 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति' की 1980 में स्थापना की और कवि सम्मेलनों की परंपरा आरंभ की। उसके बाद रामेश्वर अशांत गुलाब खंडेलवाल, डॉ. भूदेव शर्मा, डॉ. वेदप्रकाश 'बटूक', प्रो. राम चौधरी, डॉ. विजयकुमार मेहता, डॉ. सुषम वेदी, डॉ. अंजना संधीर, डॉ. सुधा ओम ढींगरा, रेणु गुप्ता राजवंशी, देवेंद्र सिंह आदि हिंदी साहित्यकारों, हिंदी प्रोफेसररों तथा हिंदीप्रेमियों ने वहाँ हिंदी भाषा एवं साहित्य का ऐसा संसार निर्मित कर दिया है कि हिंदी के प्रवासी साहित्य में उसने अपनी अलग पहचान बना ली है।

मॉरिशस हो या फिजी, अमेरिका हो इंग्लैंड, सभी का इतिहास, परिवेश, प्रकृति, समाज रीति–रिवाज, विश्वास–मूल्य तथा जीवन–शैली आदि सभी भारत से भिन्न हैं, अतः इन देशों में रचा गया साहित्य भारत में रचे साहित्य के समरूप नहीं हो सकता। यहाँ तक कि मॉरिशस में रचना हिंदी साहित्य और अमेरिका में प्रवासी हिंदी–लेखकों का लिखा साहित्य भी एकरूप नहीं है, क्योंकि दोनों की देशीय स्थिति, जीवन और समाज, संघर्ष और सरोकार नितांत भिन्न–भिन्न हैं। अभिमन्यु अनत ने लिखा है कि मॉरिशस के हिंदी साहित्य की अपनी मौलिकता है और यह उसके देशीय संस्कृति के चित्रण में है। यही स्थिति अमेरिका, इंग्लैंड, दुबई–आबूधाबी आदि देशों के प्रवासी हिंदी साहित्य की है।

हिंदी के प्रवासी साहित्य ने हिंदी की एक नई शाखा खोली है, एक नया साहित्यिक संसार हमें मिला है, एक नया विचार, नई संवेदना, नई जीवनदृष्टि तथा नया सरोकार प्रवासी साहित्य ने प्रस्तुत किया है। हिंदी पाठक इससे समृद्ध हुआ है और हिंदी के माध्यम से वैश्विक चेतना की अनुभूति करने का अवसर मिला है। अब यह हिंदी साहित्य की अंग है और इसे हिंदी साहित्य के इतिहास में समुचित स्थान मिलना ही चाहिए।

संदर्भ

1. 'विश्व हिंदीभाषा', केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, प्रथम संस्करण 1999
2. 'दुर्गा' हस्तलिखित मासिक पत्रिका (1935–38) के पहले वर्ष की जिल्द विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली के कबाड़ से उसकी मालिक संस्था 'हिंदी प्रचारिणी सभा' को वापिस कराने का श्रेय इन पंक्तियों के लेखक को हैं।
3. 'मॉरिशस की हिंदी कहानियाँ', संपादकः कमल किशोर गोयनका, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2000, भूमिका से।
4. 'स्मारिका', 'सातवाँ' विश्व हिंदी सम्मेलन, सूरीनाम, संपादक : कमलकिशोर गोयनका, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2003
5. 'वर्तमान साहित्य', प्रवासी साहित्य विशेषांक, जनवरी–फरवरी, 2006 'कौन कितना निकट' कहानी–संग्रह, आत्मकथन से।